तुम ख़ुद जब तैयार हो जाओगे तो गुरु की मदद काम पूरा करेगी

सभी जीव जन्तुओं की दुहरी ज़िंदगी है. दुनियावी (भौतिक) ज़िंदगी ऊपर है और रूहानी (आत्मिक) नीचे दबी हुई है. भौतिक जीवन अस्थायी है और आत्मिक जीवन हमेशा रहने वाला है. भौतिक जीवन नक़ल है. असली ज़िंदगी तो रूहानी है, दुनियां ने उसे ढक रखा है. जब तक दुनियाँ का तज़ुर्बा न होगा, यहाँ की वस्तुओं और सुख की नाशवानता का पता नहीं लग जायेगा, तब तक रूहानी ज़िंदगी की तरफ अभ्यासी नहीं मुड़ेगा. कैसे बढ़ेगा?

हमारी आत्मा जो दयाल देश से निकाली गयी और कालदेश यानी इस दुनियाँ में भेजी गयी उसकी वजह यह थी कि हमारे अन्दर ख्वाहिशात (कामनाएं- वासनाएं) भरी पड़ी थीं इसलिए परमात्मा ने दया करके हमें यहाँ भेजा. हम जब पैदा हुए और आँख खुली तो पहले माँ-बाप को देखा, भाई-बहिनों को देखा, फिर दुनियाँ की और चीज़ों को देखा और हमें उनसे मोह हो गया. आये थे दुनियां से निकलने लेकिन उलटे उलझ गए.

दुनियाँ के सब काम करते-करते जीव सब बातों का कर्ता अपने आप को समझने लगता है, लेकिन जब उसे होश आता है और दुनियाँ की बातों का तज़ुर्बा होता है तब वह देखता है कि जितने काम मैं कर रहा हूँ वह हमेशा रहने वाले नहीं हैं. शादी ब्याह किया तो ख़ुशी मिली लेकिन शादी के बाद जब बाल-बच्चेदारी और गृहस्थी के दुःख-मुसीबतें सामने आती हैं तो वह ख़ुशी जाती रहती है. संतान पैदा हुई तो ख़ुशी होती है लेकिन उसके मर जाने पर या अलहदा हो जाने पर क्या वही ख़ुशी क़ायम रहती है. रुपया पैदा करते हैं और उसे जोड़-जोड़ कर खुश होते हैं, क्या वह क़ायम रहेगा? बड़े-बड़े सेठ साहूकार एक दिन में दिवालिया हो जाते हैं, बड़े-बड़े राजे महाराजे खाने के लिए मोहताज़ दिखाई देते हैं. कहाँ गयी वह ख़ुशी? हम यहाँ आये हैं दुनियाँ का तज़ुर्बा करने के लिए. इसलिए यह ज़रूरी है कि इस दुनियाँ में जितना आवश्यक हो उतना उसमें घुसो यानी ज़रुरत के मुताबिक उसमें व्यवहार करो लेकिन उसे अपना लक्ष्य मत बनाओ. अगर तुमने उसी को सब कुछ समझ रखा तो ईश्वर के दरबार में कैसे घुसोगे?

लोग कहते हैं कि तरक़्क़ी नहीं होती. फंसे हुए हैं दुनियाँ में, एक दो दिन को शौकिया सत्संग में आये, घर पर भी कभी-कभी संध्या पूजा कर ली, नहीं तो दुनियाँ के धंधों में ही लगे रहते हैं. मकान बनवाने की ख्वाहिश हुई तो उसको बनाने के लिए रूपये के इंतज़ाम की फ़िक्र हुई ,क़र्ज़ लिया या और कहीं से इंतज़ाम किया. जब मकान बन कर तैयार हो गया और कर्ज़ा भी अदा हो गया तो यह फ़िक्र पड़ गयी कि कोई किरायेदार नहीं मिलता.जब किरायेदार मिल गया, माल इकठ्ठा होने लगा तो चोर-डाँकू आने लगे, रखवाली की फ़िक्र पड़ गयी.

क्या ज़िन्दगी भर यही करते रहोगे? ईश्वर का ध्यान कब करोगे? किसी को देखो तो वह बेटों की शिकायत करता रहता है की बेटे कहना नहीं मानते. यह तो दुनियाँ का क़ायदा है. वो अपना घर देखें या तुम्हारा देखें. इसमें शिकायत काहे की? बहुएं आती हैं अपना घर छोड़कर और बेटा बहू की नहीं सुनेगा तो क्या तुम्हारी सुनेगा? सासें शिकायत करती हैं कि जब से बहू घर आयी है तब से बेटा हमारी बात नहीं सुनता . क्या तुमने अपने बेटे को परमेश्वर समझ रखा है कि वही तुम्हारा पालन-पोषण करेगा? तुम अपना फ़र्ज़ पूरा कर दिया,अब यह तुम्हारे बेटे की ज़िम्मेदारी है कि वह अपना फ़र्ज़ पूरी तरह अदा करता रहे. अगर वह अपना फ़र्ज़ अदा नहीं करता तो इसमें दुखी होने की क्या बात है? अगर लड़कों के झंझट में पड़े रहोगे तो ईश्वर की तरफ तुम्हारा ध्यान कैसे लगेगा?

जो चीज़ हमें ईश्वर से दूर करती है, हमें चाहिए कि हम उसे छोड़ते चलें और जो चीज़ हमें ईश्वर के नज़दीक लाती है उसे अपनाते चलें. लेकिन हम ऐसा कर नहीं पाते. बात क्या है? अभी अधिकार पैदा नहीं हुआ है. संस्कार तो बना और मनुष्य जन्म भी मिला लेकिन अगर अधिकार भी बनता तो गुरु की ओट लेते जिससे मन से पिण्ड छूट जाता. लेकिन जो समझते हैं कि मन ही उनका साथी हो वो दरअसल ईश्वर को नहीं चाहते और मन के कहने ही पर चलते हैं. हर समय मन ही उन पर हावी रहता है.

एक बात और कही जाती है कि मन नहीं मानता. तुम्हें अपनी तो अपनी रिश्तेदारों तक कि फ़िक्र पड़ी है. उनकी उलझनों तक की ज़िम्मेदारी तुमने अपने ऊपर ले रखी है. कहते हैं कि फलां ने ये बुराई की और फलां इस तरह ख़राब है. क्या तुम इसी काम के लिए यहाँ आये थे और क्या यह काम तुम्हारे ही सुपुर्द है? ईश्वर तमाम दुनियां का मालिक है. तुम अपने आप को मालिक क्यों समझते हो? तुम ईश्वर का मुक़ाबला करते हो और हो कुछ नहीं. फिर कहते हो कि मन नहीं लगता.

फंसे तो तुम खुद हो, गुरु तुम्हें कैसे हटाए. तुम खुद निकलना चाहते हो और उसके लिए कोशिश भी करते हो मगर निकल नहीं पाते क्योकि तुम चाहते हो कि तुम्हारे दुनियाँ के सब काम भी पूरे हो जाएँ और दीन भी मिल जाए. यह नहीं हो सकता. एक गुरु नहीं अगर दुनियाँ के सारे गुरु भी ज़ोर लगाएं लेकिन जब तक तुम नहीं निकलना चाहोगे तब तक कोई तुम्हारी मदद नहीं कर सकता. संत तो दुनियाँ उजाड़ने आते हैं, आग लगाने आते हैं. मतलब यह है कि दुनियाँ में कर्म करते हुए उसमें फंसो नहीं, उसे मुख्य मत समझो. मन को और अपने आप को दुनियाँ के झंझटों से निकालो.

ख़ुदी (अहं या ego) क्या है? खुदी यह है कि मन चाहता है कि जिसको चाहूँ उसे अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ चलाऊं. धर्म पर चलने के बाद भी कोई-कोई दुखी रहता है, ऐसा क्यों है? ऐसा इसलिए है कि ख़ुदी बीच में है. चाहते हैं कि जैसा मैं कर रहा हूँ वैसा ही सब करें. जब तक दुनियाँ तुम्हारे सामने है और तुमने उसी को अहम् समझ रखा है, तब तक ईश्वर तो मिलता नहीं. इसलिए पहले अपनी सहायता आप करो. तुम खुद फंसे हो, मन की ज़ंजीरों में तुम खुद जकड़े हुए हो, अगर तुम उन ज़ंजीरों को काटना पसंद करोगे तब गुरु तुम्हारी मदद करेगा. गुरु की मदद मिलेगी तो तुम्हारा काम बन सकता है. फ़ारसी में कहा गया है :

हम ख़ुदा ख़्वाही व हम दुनिया ए दूँ !

ई ख्यालस्तों मुहालस्तो जिनूं !!

(भावार्थ: चाहते हो दुनियाँ भी मिल जाये और ईश्वर भी मिल जाये. ऐसा ख्याल करना पागलपन नहीं तो और क्या है?)

जब तक यह शरीर है तब तक ख़ुदी है, जीवन मुक्त होने पर भी पूरे तौर से ख़ुदी का चला जाना मुश्किल है. कुछ न कुछ यह बाकी रहती है. केले के पत्ते सूख कर गिर जाते हैं मगर उनका निशान पेड़ के तने में बाकी रहता है. यही हाल ख़ुदी या ममता का है. मगर यह ममता बंधन का बायस (कारण) नहीं होती. विचार दो तरह के होते हैं- बाहरी और अंदरूनी. किसी फल के छिलके के लिए गिरी (मगज़) की ज़रूरत है. न छिलके के वगैर गिरी रह सकती है और न गिरी के वगैर छिलका ही रह सकता है. जूता पहनकर तुम काटों पर चल सकते हो. इसी तरह इस आत्म-ज्ञान की जूता पहनकर तुम इस कांटेदार दुनियाँ में घूम सकते हो.

अज्ञान की वजह से इंसान ईश्वर की तलाश अपने से बाहर करता है. जब आदमी को समझ आ जाती है कि ईश्वर अन्दर है तो इसी समझ का नाम ज्ञान है. क्या तुमको मालूम है की परमात्मा इंसान के अन्दर किस तरह रहता है? वह इस तरह रहता है जैसे पिछले वक्त में शरीफ़ घरों की स्त्रियां चिकों के अन्दर रहती थीं. वह तो हरेक को देख सकती थीं लेकिन उनको न तो कोई देखता था और न कोई देख सकता था. परमात्मा बिलकुल इसी तरह रहता है. रौशनी देना चिराग़के लिए स्वाभाविक बात है. उसको रौशनी में कोई रोटी बनाता है, कोई जाल बनाता है और कोई भगवत गीता पढता है. इसमें रौशनी का अपना काम तो सबके लिए यकसा है.

जिस वक़्त मरते समय तीरों की शय्या पर भीष्म पितामह लेटे हुए थे तो उनकी आँखों में आंसू जारी थे. अर्जुन ने भगवान कृष्ण से कहा कि "प्रभु ! कैसे ताज्जुब की बात है कि हमारे परदादा जो सच्चे आदमी हैं, जिनका अपनी इन्द्रियों पर पूरा अख्त्यार है और जो आत्मज्ञान से भी भरपूर हैं, वह माया के भरम की वजह से रो रहे हैं." भीष्म ने खुद जबाब दिया - "भगवन ! आपको मालूम है कि मैं माया की वजह से नहीं रो रहा हूँ. मैं सोचने लगा हूँ कि आपकी लीला विचित्र और समझ से बाहर है. जिस ईश्वर का नाम लोग तमाम खतरों पर विजय प्राप्त करने के लिए लेते हैं वही परमात्मा पाण्डवों का रथवान बना हुआ है, उनका साथी और मददगार है फिर भी पाण्डवों के दुःख की कोई इन्तहा (सीमा) नहीं है.

राम सन्देश : नवंबर-दिसंबर, २००१